जहाँ नेमि के चरण पड़े .....

जहाँ नेमि के चरण पड़े, गिरनार वो धरती है ।
वो प्रेम–मूर्ति राजुल, उस पथ पर चलती है ।।
उस कोमल काया पर, हल्दी का रंग चढ़ा ।
मेहंदी भी रूचिर राची, गल मंगल–सूत्र पड़ा ।
पर मांग न भर पायी, ये बात ही खलती है ।।
जहाँ नेमि के चरण पड़े ....

सुन पशुओं का क्रुन्दन, तुमने तोड़े बंधन ।
जागा वैराग्य तभी, धारा प्रभु पथ पावन ।
उस परम–विरागी को, चिर प्रीति उमड़ती है ।।
जहाँ नेमि के चरण पड़े ....

जीवों के प्रति जिसके, चितवन में समता है ।
जो पशुओं की पीड़ा, पल–भर में हरता है ।
उसकी विरहिन दासी, पीड़ा से सिसकती है ।।
जहाँ नेमि के चरण पड़े ....

राजुल की आँखों से, झर–झर झरता पानी ।
अन्तस् में घाव भरे, प्रभु–दरश की दीवानी ।
मन–मन्दिर में जिसकी, तस्वीर उभरती है ।।
जहाँ नेमि के चरण पड़े ....

नेमी जिस ओर गये प्रभु तुम, वही मेरा ठिकाना है ।
जीवन की यात्रा का, वो पथ अनजाना है ।
लख चरण 'चन्द्रप्रभु' के, राजुल तब चलती है ।।
जहाँ नेमि के चरण पड़े ....